‘लोक गाथा लोरिक चंदा का रंगमंचीय प्रयोग लोक एवं आधुनिक रंगमंच के विशेष संदर्भ में’

नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग में
एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

निर्देशक
डॉ. ओमप्रकाश भारती
एसोशिएट प्रोफेसर, नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग

प्रस्तुतकर्ता
गोविन्द यादव
पंजीयन संख्या-2013/07/204/002

ज्ञान शांति मैत्री

सृजन विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

(पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-**442005** (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

"लोकगाथा लोरिक चंदा का रंगमंचीय प्रयोग-लोक एवं आधुनिक रंगमंच के विशेष संदर्भ में"

भूमिका-vii

क. परिचय

ख. प्रस्तुत शोध की उपादेयता एवं संभावनाएं

ग. शोध का स्वरूप और सीमा

घ. शोध से संबन्धित सामग्रीका विश्लेषण तथा शोध विषय का चयन

ङ. सामग्री संकलन तथा शोध प्रविधि

च. आभार ज्ञापन

1. लोकगाथा लोरिक चंदा: परंपरा एवं विविध रूप 1-44

क. उद्भव और विकास

ख. विविध रूप

ग. विविध रूपों में कथांतर

2.विभिन्न सर्जनात्मक माध्यमों में लोरिक चंदा 45-83

क. लोक परंपरा -लोक गीत (बिरहा,बांस गीत), लोकगाथा, लोक चित्रकला

ख. हिंदी साहित्य - काव्य ग्रंथ चंदायन,उपन्यास - पुनर्नवा,

3.लोक रंगमंच पर लोक गाथा लोरिक चंदा-परंपरा एवं शिल्प का विश्लेषण 84-103

क. नटुवा नाच

ख. नाचा

4.आधुनिक रंगमंच में लोकगाथा लोरिक चंदा-प्रयोग एवं शिल्प का विश्लेषण 104-127

क. ‘एक तारा टूटा’ (सुमन कुमार)

ख. ‘सोन सागर’ (हबीव तनवीर)

ग. ‘लोरिकायन’ (डॉ ओमप्रकाश भारती)

उपसंहार 128-133

संदर्भ134-137

भूमिका

परिचय

लोक गाथा हमारे समाज और इतिहास के तेजस्वी तत्व है। ये भारतीय लोक संस्कृति के चिरवाहक प्राणाधार है, जोकि लोक में कहीं न कहीं सुरक्षित है, वहीं भारतीय लोक संस्कृति के अवदानों में लोकगाथा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। लोकगाथा हमारे समाज को नवीन दृष्टि देती आईहै।यही कारण है,कि लोकगाथाएँ आज भी भारतीय समाज में सुरक्षित है,और उनमें रंगमंचनीय दृष्टि से नित नये प्रयोग भी किए जा रहे है।प्रस्तुत शोध का विषय भी लोकगाथा लोरिक चंदा है। जिसे हिंदी की विभिन्न बोलियों यथा भोजपुरी, अवधी, मगही, मिर्जापुरी में 'लोरिकायान', मैथली में 'लोरिक-मनियार',छत्तीसगढ़ी में चंदैनी,आदि नामों से जाना जाता है। लोरिकायान हिन्दी प्रदेश की महत्वपूर्ण लोकगाथा है। लोरिकायन मुख्य रूप से अहीर समाज के लोगों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर गाई जाती है। कालांतर में अन्य समुदायों के कलाकारों और लोकगायकों ने भी मनोरंजनार्थ तथा जीविकोपार्जन के निमित इस गाथा को गाना आरंभ किया। हिन्दी प्रदेश की अवधी, भोजपुरी, मगही, मिर्जापुरी, छत्तीसगढ़ी तथा बुन्देली बोलियों के अतिरिक्त बंगला और तेलगू भाषा में भी इसके अनेक रूप मिलते है। यह लोकगाथा भारत के चालीस करोड़ लोगों की स्मृति में परंपरित और संरक्षित है। लोरिकायनविषय की व्यापकता,विस्तार तथा वस्तु के दृष्टिकोण से लोक महाकाव्य की संज्ञा दी जा सकती है। मौखिक परम्परा में होने के कारण लोरिकायन की ऐतिहासिकता तथा देशकाल को लेकर विद्वानों में मतभेद है। वर्णरत्नाकर में लोरिक नाच का उल्लेख हुआ है। वर्णरत्नाकर का समय तेरहवीं शताब्दी है सहज अनुमान लगाया जा सकता हैकि लोरिक उससे पहले हुए होगें। गाथा की विषय वस्तु तथा गाथा में वर्णित सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए डॉ. ओमप्रकाश भारती ने लोरिक का काल दसवीं शताब्दी माना है।

भारतीय लोक आख्यानों में लोरिकायान की एक अन्य विशिष्टता यह भी हैकि इसने साहित्य और रंगमंचीय प्रेमियों को आकर्षित किया है। सर्जन के लिए उपजीव्य सामग्री प्रदान कीहै। संतकवि मुल्ला दाऊद नें लोरिक और चंदा के प्रेमप्रसंगो का पुनर्सजृन कर चंदायन लिखा, जो प्रेमख्यान परंपरा की कालजयी कृति है।बंगला रूपों को आधार बनाकर शाह सुलेमान ने सती 'मैनाबती' और लोरचन्द्रा लिखा। हिन्दी के महान लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीके उपन्यास पुनर्नवा की आधार सामग्री लोरिकायान को माना जाता है। उनके ही उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा के अनेक प्रसंग लोरिकायन से जुड़े है, जिसमें उससे जुड़े स्थलों की चर्चा की गईहै। उपन्यास में मगध से प्रयाग यात्रा के क्रम में बाणभट्ट को लोरिक आकर्षित करता है। मैथली के प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित डॉ. ब्रज किशोर वर्मा ने 1970 में लोरिक विजय नाम से उपन्यास लिखा। दौलत काज़ी कृत 'सतिमैना-उ-लोर चंदानी' नाम से, गवासी कृत 'मैना सतवंती' असफिया पुस्तकालय हैदराबाद में अप्रकाशित रूप में रखी हुई है।

इस प्रकार दसवीं शताब्दी से परंपरित लोकगाथा 'लोरिक चंदा' सेसृजन के अनेक माध्यम बने। लोरिक-चंदा की गाथा का लोक चित्रकला में भी प्रयोग हुआ है।लोक संगीत बिरहा, बाँस गीत में भी लोरिक-चंदा की गाथा को गया जाता है। रंगमंच के क्षेत्र में लोक एवं आधुनिक रंगमंच के प्रयोक्ताओं ने नई दृष्टि और प्रयोग के साथ इसकी प्रस्तुति की। रंगमंचीय संदर्भ में छत्तीसगढ़ नाचा, बिहार के नटुवा नाच के मंच पर लोकगाथा लोरिक चंदा का मंचन होता है। नटुवा नाच और नाचा के मंच पर यह लोकगाथा स्थानीय संस्कृति के विभिन्न तत्वों को प्रस्तुत करती है। आधुनिक रंगमंच में हबीव तनवीर जैसे ख्यातिलब्ध रंगनिर्देशक नें 'सोन सागर' नाम से इस लोकगाथा की 26 फरवरी 1988को रंगमंचीय प्रस्तुति की और नवीन प्रयोग के अंतर्गत वस्तु तत्व को कथा श्रोता से जोड़ा है। चंदा के मध्यम से स्त्री चेतना द्वारा परंपरा को नया अर्थ देने का सार्थक प्रयास हबीव तनवीर करते है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक सुमन कुमार ने लोरिक-चंदा की लोकगाथा पर आधारित 'एक तारा टूटा' नाम से नाटक की रचना की। जिसका मंचन वर्ष 1997 में ख्याति प्राप्त निर्देशक बंसी कौल ने किया। जिसमें चंदा सिर्फ अपनी ही नहीं बल्कि पूरे समाज समुदाय की पीड़ा को रखती हैं। डॉ. ओमप्रकाश भारती ने मैथली बोली में प्रचलित लोरिक की गाथा को अपनाया। जिसे 'लोरिकायन' नाम से आधुनिक रंगमंच पर प्रस्तुत किया। प्रस्तावित शोध में इस लोकगाथा के विविध रूपों का अध्ययन करते हुए उन तथ्यों को उजागर किया गया है, जो बार-बार साहित्यकारों, रंगप्रयोक्ताओं को आकर्षित करते रहेहैं। साथ ही लोकनाट्य, लोकगाथाओं, लोकचित्र कला,लोक संगीत आदि सभी माध्यमों का विश्लेषण किया है।

प्रस्तुत शोध की उपादेयता एवं संभावनाएं

चार अध्याय में विभाजित प्रस्तुत शोध विषय में लोरिक-चंदा गाथा के विविध रूपों को एकत्रित किया गया है। जिनमें विविध रूपों एवं लोक में प्रचलित मूल कथा रूपों के कथा तत्वों में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में उक्त गाथा को सृजन के अनेक माध्यमों में होने के कारण इन सभी माध्यमों का भी विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही लोक नाट्य की प्रस्तुतियों में लोरिक चंदा की गाथा तथा शैली में भिन्नता एवं कथा रूप के रूपान्तरण का विश्लेषण किया गया है। लोरिक चंदा की गाथा का आधुनिक रंगमंच में हुई प्रस्तुतियों के व्यवहारिक और सैद्धांतिक पक्ष की पुर्नस्थापना में किन किन प्रविधियों को प्रयोग में लाया गया है। जैसे की हबीव तनवीर द्वारा निर्देशित 'सोन सागर' में गायक कथानक की पृष्ठभूमि को नाचा की शैली में प्रस्तुत करते है और नाचा छत्तीसगढ़ की अपनी लोक नाट्य शैली है। वहीं सोन सागर नाटक मे तनवीर जी दो सूत्र धार को मंच पर लेकर आते है।इसी प्रकार बंसी कौल एवं डॉ. ओमप्रकाश भारती द्वारा निर्देशित नाटकों क्रमशः 'एक तारा टूटा ''लोरिकायान' का विश्लेषण किया गया है। मेरे संज्ञान में अभी तक निम्न तथ्यों पर शोध नही किया गया है, जो की मौलिक कार्य है। यह शोध लोरिक गाथा के शोधर्थियों को उपयोगी होगा और उन्हें आधार सामग्री की संभावनाएँ प्रदान करेगा।

शोध का स्वरूप और सीमा

मानव का मानव के प्रति सहज प्रेम लोक संस्कृति का साध्य रहा है। श्रम की पूजा के साथ ही पारस्परिक प्रेम की भावना हमारे लोक जीवन का मूल आधार रही है। हिन्दी की बोलियों में प्रचलित ऐसी ही लोकगाथा लोरिक-चंदाहै। शोध की भौगोलिक सीमा हिन्दी क्षेत्र और वहाँ की बोलियों तक सीमितहै। लोरिक की गाथा सर्जन के अनेक मध्यम है। यथा- काव्य, उपन्यास, चित्रकला, लोकनाट्य, लोकगाथा आदि में व्याप्त है।

प्रस्तुत शोध को चार अध्याय में बांटा गया है। शोध के अंत में उपसंहार और संदर्भ ग्रन्थों की सूची है। प्रथम अध्याय में लोकगाथा की परंपरा और विविध रूप केन्द्रित है।प्रस्तुत अध्याय में लोकगाथा लोरिक -चंदा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, परंपरा, विविध रूप तथा कथा रूपों की विविधता आदि पर प्रकाश डाला गया है।मौखिकपरंपरासेहीलोरिकायनकेअनेकरूप प्राप्त होतेहै।इसकेगायकोंकीकमीनहींहैं। मिर्जापुरकेप्राय: हरगाँवमेंलोरिकीगायीऔरसुनीजातीहै। प्रस्तुतसंग्रहके अतिरिक्त तुलनात्मकअध्ययनकेविचारसेकुछ अन्य गायकोंसेभीसंपर्ककरनेकाअवसरमिला।उसकेआधारपरऐसालगाकिमौखिककथा-रूपोंमेंभीपर्याप्तवैषम्यहै। विभिन्न गायकभिन्न प्रकारसेकथाकहतेहैं। ऐसामौखिकपरंपराकेकारणहीहै। लोरिक-कथाकेलिखितऔरमौखिकदोनोंमिलाकरअनेकरूपप्राप्तहोतेहैऔरसबमेंपरिवर्तनभीदेखाजाताहै। साम्यकहींनहींहैनलिखित,न मौखिकऔरनहीलिखित-मौखिककेसमन्वयात्मक रूपोंमें।इससेयहबातस्पष्टहोजातीहैकिलोरिकायन ‘ विशुद्धरूपसेलोककीलोककेलिएलोकद्वाराप्रणीतएकऐसीरचनाहैजिसकाउद्देश्य हीलोक-मानसकीपरितृप्तियासंतृष्टि है।इसेलोकहीपचासकताहै। लोरिकायन उद्देश्यकेअनुरूपघटाई-बढ़ाईगईहै औरइनकेद्वारासिद्धांतयाविचारका दृष्टांतीकरण हुआहै।इसका पर्याप्त संस्करण किया गया है। इसकेकथानकमेंअभिजातकथा-साहित्य कीशिल्प -संबंधीजटिलताएँआगईहै। इसमेंलोकवार्ताकथा-शैलीकीसहजताऔरस्वाभाविकता काअभावभीहै।

दूसरे अध्याय में विभिन्न सर्जनात्मक माध्यमों में लोरिक चंदा का विश्लेषण किया गया है। जिसमें विभिन्न सर्जनात्मक माध्यमों लोकगीत, लोकगाथा, लोकचित्रकला, ग्रंथ, उपन्यास, आदि पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें सृजन के सभी माध्यमों को एकत्रित करके उनका विश्लेषणात्मक अध्यन किया गया है और लोरिक की व्यापकता पर प्रकाश डाला गया है। लोरिक कथा की व्यापकता सृजन के विभिन्न माध्यमों में है। मौखिक परंपरा के अंतर्गत लोरिक-चंदा का विस्तार छत्तीसगढ़ के बाँस गीत, उत्तर प्रदेश की बिरहा तथा मगही, मैथली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़, बुन्देली, संथाली आदि बोलियों में प्रचलित लोकगाथाओं में हुआ है। जहाँ नवीन प्रयोग में हमें हजारी प्रसाद जी का पुनर्नवा मिलता है। लोरिक-चंदा की कथा ने 1000 ई॰ से लोक एवं शास्त्रीय दोनों ही माध्यमों को सृजन का विस्तृत फ़लक प्रदान किया है। लोरिक कथा के लिखित और मौखिक दोनों ही रूप हमे प्राप्त होते है और सभी मे अंतर भी पाया गया है। निष्कर्ष रूप मे यह कह सकते है कि प्रयोजन की दृष्टि से गाथा को प्रेम कथात्मक, वीर कथात्मक, प्रेम-शौर्य कथात्मक आदि अनुभागों मे विभाजित किया गया है।

तृतीय अध्याय लोक रंगमंच पर लोक गाथा लोरिक चंदा परंपरा और शिल्प का विश्लेषण है।लोकगाथा लोरिक चंदा को नटुवा नाच और नाच के मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। अध्याय में नटुवा नाच और नाचा के शिल्प का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध में पाया गया है। की नटुवा नाच के अधिकांश कथानक लोकगाथाओं से लिए गए है।पौराणिक, प्रेमाख्यानक तथा वीरकथात्मक लोकगाथाओं के अलावा कुछ सामाजिक घटनाओं का मंचन भी नटुवा नाच के मंच पर होता है। नटुवा नाच के रंगमंच पर चित्रकारी किये हुए पर्दों का प्रयोग पुरानी नाट्य परम्पराओं से ग्रहण की गई है। नटुवा नाच का पूर्वरंग गायन और नृत्य से आरंभ होता है, जो चार चरणों में पूरा होता है। वहीं नाचा के कथानक पौराणिक आख्यानों के अलावा विविध सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं पर आधारित होते है। अभी भी नाचा के पूर्वरंग में विभिन्नतरह की साखियां गायी जाती है। नाचा के प्रदर्शन में गम्मत की बड़ी भूमिका है। समय के साथ-साथ नाचा के स्वरूप में जो परिवर्तन आना आरम्भ हुआ है। उसके अंतर्गत अब लोग नाचा के परिमार्जन एवं परिष्करण की दिशा में सोचने लगे है। अब नाचा के अंतर्गत छोटी-छोटी नाटिकाओं को भी लिया जाने लगा है।

चतुर्थ अध्याय में लोकगाथा लोरिक चंदा के आधुनिक रगमंच पर हुए मंचनों का शिल्पगत अध्ययन किया गया है। जिसमें हबीव तनवीर, सुमन कुमार, डॉ. ओमप्रकाश भारती, के नाटकों क्रमश: सोन सागर, एक तारा टूटा'' लोरिकायन' को लिया गया है।'एक तारा टूटा" को मंच पर निर्देशित बंसी कौल ने किया है। जिसमें लोरिक और चंदा के मिलन का प्रेम-प्रसंग मुखर हुआ है। जिसमें बंसी कौल ने राऊत नाचा के कुछ तत्व नाटक से जोड़े है। नाटक में क्रमबद्धता नही है। एक कहानी से दूसरी कहानी निकलती है। प्रस्तुत नाटक में बंसी कौल ने छत्तीसगढ़ी की संस्कृति, सामाजिक, औए संगीत पद्धति को विशेष कर अपनाया है। 'सोन सागर' में गायक कथानक की पृष्ठभूमि को नाचा की शैली में प्रस्तुत करते है। सोन सागर में हबीव तनवीर दो सूत्रधार को लाते है। उक्त अभिनेता सूत्रधार से इतर भी अभिनय करते है। इसके अलावा प्रस्तुत अध्याय में कथानक का रूपान्तरण, सैद्धांतिक पक्ष की पुर्नस्थापना की प्रविधियों आदि पर प्रकाश डाला गया है।

उपसंहार में प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त हुऐ सभी तथ्यात्मक विश्लेषण का वर्णन किया गया है साथ उन सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है जिसपर अभी शोध की आवश्यकता है।

शोध से संबन्धित सामग्रीका विश्लेषण तथा शोध विषय का चयन

लोरिकायन पर अब तक कई विद्वानों ने महत्वपूर्ण शोध किया है। विदेशी विद्वानों में बेगलर, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डब्ल्यू क्रुक तथा वेरियन एल्विन आदि के शोध कार्य महत्वपूर्ण है। भारतीय विद्वानों में डॉ. शरतचन्द ने 1890 में भोजपुरी और बांगला रूपों का तुलनात्मक शोध अध्ययन प्रस्तुत किया। डॉ. ओम प्रकाश भारती ने इसके सामाजिक एवं ऐतिहासिक संदर्भो की विस्तृत और शोध परक व्याख्या की। तेरहवी शताब्दी में ज्योतिरीश्वर ठाकुर लिखित वर्ण रत्नाकर में लोरिक नाच का उल्लेख इस गाथा की सुदीर्घ रंगमंचीय परंपरा को दर्शाता है। माच, नाच, और नटुवानाच के मंच पर यह लोकगाथा स्थानीय संस्कृति के

विभिन्न तत्वों को प्रस्तुत करती है। आचार्यहजारी प्रसाद द्वार रचित ‘पुनर्नवा’ उपन्यास और मुल्ला दाऊद कृत ‘चंदायन’ में लोरिक की गाथा का उल्लेख है।आधुनिक रंगमंच पर हबीव तनवीर जैसे ख्यातिलब्ध रंगनिर्देशक नें ‘सोन सागर’नाम से इस लोकगाथा की रंगमंचीय प्रस्तुति की तथा नवीन प्रयोग के अंतर्गत वस्तु तत्व को कथा श्रोता से जोड़ा है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक सुमन कुमार ने‘एक तारा टूटा’तथा डॉ.ओमप्रकाश भारती ने ‘लोरिकायन’नाम से आधुनिक रंग प्रयोगों के साथ इस गाथा की रंगमंचीय प्रस्तुति की।वेरियर एल्विन ने फॉक सांग्स ऑफ छत्तीसगढ़ी नाम से,एस.सी. दूबे नेफील्ड सांग्स ऑफ छत्तीसगढ़ी, बिहारराष्ट्रभाषापरिषद्नेभीलोरिकायनकेकुछगीतसंकलितकरवाएंहै। ब्रजकिशोरवर्मा ’मणिपद्म ‘रचित’ लोरिक ‘लघुपुस्तिका एवं डॉ पी. सी. लाल, डॉ अर्जुन दास केसरी आदि विद्वानों द्वारा शोध किए गए है। इस प्रकार निम्न पुस्तकों और शोध प्रपत्रों का अध्ययन कर लोरिक चंदा पर शोध करने की रुचि हुई। अध्ययन की गहनता में जाने के बाद ज्ञात हुआ की अभी तकलोकगाथा लोरिक चंदाके कथानक का रूपान्तरण, (transformation of tax) और आधुनिक रगमंच पर हुए प्रयोगों पर कोई शोध नहीं किया गया है। शोध विषय के निर्धारण में इन तथ्यों ने मुझे उत्साहित किया।

सामग्री संकलन तथा शोध प्रविधि

शोध सामग्री संकलन के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रविधियाँ अपनायी गयी है। प्रत्यक्ष स्रोत के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों और आलेखों से सहायता ली गयी है। जहाँ कहीं से भी शोध सामग्री ली गयी है, संदर्भ के रूप में उसका उल्लेख कर दिया गया है। अप्रत्यक्ष शोध के अंतर्गत लोकगायकों से लिया साक्षात्कार तथा मौखिक परंपरा से संकलित अथवा लिपिबद्ध गीत है। इनकी भी सूचना संदर्भ के रूप में दी गयी है। इंदिरा कला संगीत विश्वविधालय का पुस्तकालय, संगीत नाटक अकादमी का पुस्तकालय, राष्ट्रीय नाट्य नई दिल्ली के पुस्तकालय आदि जगहों पर जाकर शोध सामग्री संकलित की गयी है। साथ ही लोकनाट्य से संबन्धित विभिन्न अंचलों की शोध यात्राएं की गयी है। शोध कार्य के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण तथा विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

आभार ज्ञापन

प्रस्तुत शोध कार्य पूरा करने में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मार्ग दर्शन और प्रेरित उनके प्रति आभार प्रकट करना औपचारिकता होगी। इस संदर्भ में शोध निर्देशक डॉ. ओमप्रकाश भारती का आभारी हूँ। जिन्होंने विषय के चयन से लेकर शोध कार्य में आई समस्याओं का निवारण किया और निरंतर प्रोत्साहन करते रहे। प्रो॰ सुरेश शर्मा, डीन ,विभागाध्यक्ष, नाट्य कला एवं फिल्म अध्ययन विभाग का भी आभारी हूँ जिनके मार्ग दर्शन से शोध कार्य संभव हो सका। उन लोक कलाकारों, गायकों का मैं अतिशय ऋणी हूँ, जिनके कंठो और स्मृति से गीत ओर गाथा प्राप्त हुऐ। इसके अतिरिक्त उन सभी विद्वानों, लेखकों, समीक्षकों तथा गुरुजनों का जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बराबर प्रेरित और प्रोत्साहित किया।

प्रकाश झा का भी आभारी हूँ जिनके अथक प्रयास से सामग्री संकलन में सहयोग मिला। साथ ही डॉ. अनुजा सुप्रिया, धर्म प्रकाश 'मंटो' का जिनके द्वारा मार्ग दर्शन एवं उत्साह हमेशा मिलता रहा है।

आभार व्यक्त करता हूँ बड़े भाई समान एवं स्नेह मित्र ध्रुव त्रिपाठी का जिसने शोध विषय पर चर्चा के साथ हमेशा मेरा छोटे भाई सा ख्याल रखा और देर से आने पर भोजन कि व्यवस्था सबन्धित समस्या का समाधान किया।

इन्हीं शब्दों के साथ साहित्य एवं कालविदों के समक्ष अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत करता हूँ। मेरीअक्षमताओं एवं अबोधताओं से संयुक्त त्रुटियों सहित यह शोध प्रबंध सुधी जनों के हाथों में है।

उपसंहार

वर्तमान समाज में रंगकर्म ही एक ऐसा मध्यम है, जो सामूहिकता एवं दर्शकों से सीधे संवाद के कारण सर्वाधिक सामाजिक भी है। रंगकर्म पर सामाजिक ज़िम्मेदारी भी सर्वाधिक है। नाटककार जिस कथा वस्तु को लेकर नाटक लिखता है, वह उसकी सचेतन सृजनात्मकता है। उसमें भी लोकगाथाओं की कथावस्तु को आधार बनाकर नाटक लिखना किसी भी नाटककार के लिए आसान नहीं होता है। क्योंकि लोकगाथों में किसी क्षेत्र विशेष की संस्कृति, सामाजिक संस्कार, रूढ़ियाँ, परंपरा होती है और नाटककार को इन सभी तत्वों को अपने नाटक मे समाहित करना होता है। वह इन तत्वों से पालयन नहीं कर सकता। लोकगाथाएँ हमारे समाज को नवीन दृष्टि देती आई है। यही कारण है, की लोकगाथाएँ आज भी भारतीय समाज में सुरक्षित है, और उनमें रंगमंचनीय दृष्टि से नित नये प्रयोग भी किए जा रहे है। वहीं मानवीय संस्कारों की व्यंजना से ओतप्रोत 'लोकनाट्य' की परंपरा युगों पुरानी है। लोकनाट्य में लोक मानस का सुख-दुख उसकी आशा-निराशा, उसका हर्ष-उल्लास, उसका विषाद और उसकी जीवन शक्ति के साथ-साथ उसकी संघर्ष की भावना प्रतिबिंबित होती है। लोकभाषाएं विविध जीवन प्रसंगों की रसपूर्ण अभिव्यक्ति लोकनाट्य के माध्यम से करती हैं। इनमें अभिनय के साथ-साथ संगीत और नृत्य का प्रयोग पूरी उन्मुक्तता के साथ होता है जिससे वे सहज-ग्राह्य होते हैं। लोक नाट्य शीघ्रता, सुगमता और सहजता से अपनी बात दर्शकों तक पहुँचाने में सफल होते हैं इसीलिए आज भी ये गाँवों में आकर्षण के केन्द्र बिंदु हैं। वहाँ की जनता में मनोरंजन के सहज, सुलभ और लोकप्रिय साधन क्षेत्रीय लोकनाट्य ही हैं जिसे अब शहर के दर्शक और बुद्धिजीवी वर्ग भी सम्मान देते हैं। प्रस्तावित शोध विषय 'लोकगाथालोरिकचंदाकारंगमंचीयप्रयोग-लोकएवंआधुनिकरंगमंचकेविशेषसंदर्भमें' है। जिसमें लोकगाथा लोरिक चंदा के विविध सर्जनात्मक रूपों, लोक नाट्य रूपों तथा आधुनिक रंगमंच पर हुऐ सभी मंचनों का तथ्यातमक विश्लेषण कियागया है।शोध में यह पता किया गाय है की उनमें विषय रूपान्तरण हुआ है या नहीं।जिसमें शोध कार्य अपनी उपकल्पना में सही दिशा में सफल हुआ है। लोरिकायन हिंदी प्रदेश की महत्वपूर्ण लोकगाथा है। हिंदी प्रदेश की मैथिली, मगही, भोजपुरी, मिर्जापुरी, छतीसगढ़ी तथा बुन्देली आदि बोलियों के अतिरिक्त बंगला और तेलगू भाषा में इस लोकगाथा के कई रूप मिलते हैं। लोरिकायन भारत के लगभग 40 करोड़ लोगों की स्मृति में परंपरित और संरक्षित विषय की व्यापकता, विस्तार तथा वस्तु की दृष्टिकोण से इसे लोकमहाकाव्य की संज्ञा दी जा सकती है।

मौखिकपरंपरासे ही लोरिकायन केअनेकरूप प्राप्त होतेहैं।इसकेगायकोंकीकमीनहींहै।प्रस्तुतसंग्रहके अतिरिक्त तुलनात्मकअध्ययनकेविचारसे कुछ अन्य गायकोंसेभीसंपर्ककरनेकाअवसरमिला।उसकेआधारपरऐसालगाकिमौखिककथा-रूपोंमेंभीपर्याप्तवैषम्यहै। भिन्न-भिन्न गायकभिन्न प्रकारसेकथाकहतेहैं।ऐसामौखिकपरंपराकेकारणहीहै। लोरिक-कथाकेलिखितऔरमौखिकदोनोंमिलाकरअनेकरूपप्राप्तहोतेहैंऔरसबमेंपरिवर्तनभीदेखाजाताहै। साम्यकहींनहींहैनतोलिखितमेंऔरन मौखिकमेंऔरनहीलिखित-मौखिककेसमन्वयात्मक रूपोंमें।

लोरिकायन उद्देश्यकेअनुरूपघटाई -बढ़ाईगईहैऔरइनकेद्वारासिद्धांतयाविचारका दृष्टांतीकरण हुआहै।इनका पर्याप्त सस्करण किया गया है।इसकेकथानकमेंअभिजातकथा-साहित्य कीशिल्प -संबंधीजटिलताएँआगईहैं।इसमेंलोकवार्ताकथा-शैलीकीसहजताऔर स्वाभाविकता काअभावभीहै। लोरिकायन के वीरगाथात्मक सवरूप का विकास अधिक हुआ है। लोरिकायन के विविध पाठों का तुलनात्मक अध्ययन इसकी रूप गत अनिश्चितता का बोध कराते है। इसमें प्रक्षेपों का अभाव नहीं है, किन्तु मूल कथा का स्वरूप एकदम चिया हुआ होता है। मुल्ला दाऊद ने इसके प्रेमपक्ष के सांवेगिक तत्व का आध्यात्मिक निर्देश सूफी सिद्धांतों के अनुरु हुआ है। स्पष्ट है की लोकगाथा को आधार मानकर जितनी भी रचनाएँ हुई है सभी रचनाकारों ने उनमें अपने परिवेश, सुविधा, मन के अनुरूप वर्णन किया है।

सर्जन के सभी माध्यमों को एकत्रित करके उनका विश्लेषणात्मक अध्यन कर लोरिक की व्यापकता पर प्रकाश डाला गया है। लोरिक कथा की व्यापकता सर्जन के विभिन्न माध्यमों में है। मौखिक परंपरा के अंतर्गत लोरिक-चंदा का विस्तार छत्तीसगढ़ के बाँस गीत, उत्तर प्रदेश की बिरहा तथा मगही, मैथली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़, बुन्देली, संथाली आदि बोलियों में प्रचलित लोकगाथाओं में हुआ है। लोरिक-चंदा की कथा ने 1000 ई॰ से लोक एवं शास्त्रीय दोनों हो ही माध्यमों को सर्जन का विस्तृत फ़लक प्रदान किया है। लोरिक कथा के लिखित औरमौखिक दोनों ही रूप हमे प्राप्त होते है। ओर सभी मे अंतर भी पाया गया है। निष्कर्ष रूप मे यह कह सकते है की प्रयोजन की दृष्टि से गाथा को प्रेम कथात्मक, वीर कथात्मक, प्रेम-शौर्य कथात्मक आदि अनुभागों मे विभाजित किया जा सकता है। जहाँ नवीन प्रयोग में हमें आचार्य हजारी प्रसाद का पुनर्नवा मिलता है। चंदैनी, चनैनी, लोरिकायन, चंदायन लोरिकी आदि कितने ही नामों से यह प्रेमाख्यान छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं सूफी साहित्य में अलग-थलग ढंग से कहा और लिखा है। कहीं इसमें चमत्कार, कहीं शौर्य कही मानव प्रेम तो कही भक्ति का रूप झलकता है। लोकगाथा लोरिक चन्दा को नटुवा नाच और नाच के मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। अध्याय में नटुवा नाच और नाचा के शिल्प का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध में पाया गया है। की नटुवा नाच के अधिकांश कथानक लोकगाथाओं से लिए गए है। पौराणिक, प्रेमाख्यानक तथा वीरकथात्मक लोकगाथाओं के अलावे कुछ सामाजिक घटनाओं का मंचन भी नटुवा नाच के मंच पर होता है। नटुवा नाच के रंगमंच पर चित्रकारी किये हुए पर्दों का प्रयोग पुरानी नाट्य परम्पराओं से ग्रहण की गई है। नटुवा नाच का पूर्वरंग गायन और नृत्य से आरंभ होता है, जो चार चरणों में पूरा होता है। वहीं नाचा के कथानक पौराणिक आख्यानों के अलावे विविध सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं पर आधारित होते है। अभी भी नाचा के पूर्वरंग में विभिन्न तरह की साखियां गाई जाती है। नाचा के प्रदर्शन में गम्मत की बड़ी भूमिका है। समय के साथ-साथ नाचा के स्वरूप में जो परिवर्तन आना आरम्भ हुआ है। उसके अंतर्गत अब लोग नाचा के परिमार्जन एवं परिष्करण की दिशा में सोचने लगे है।अब नाचा के अंतर्गत छोटी-छोटी नाटिकाओं को भी लिया जाने लगा है।

आधुनिक मंचनों की अगर बात करे तो सोन सागर की प्रस्तुति और लोकगाथा के अन्य रूपों के तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण से पता चलता है कि सोन सागर को भी

निर्देशक सरस्वती वंदना से आरंभ करते है। जिसमें नाटक को गति देने का कार्य गीतों के मध्यम से किया गया है। सोन सागर के कथनाक कि पृष्ठ भूमि को पारंपरिक नाचा कि शैली में प्रस्तुत किया गया है। 'हमर देश कि चंदैनी' जैसे गीतों के मध्यम से हबीव जी ने प्रस्तुति को राष्ट्र से जोड़ा है। साथ ही पहली बार लोरिक कि गाथा से पूर्व कि गाथा को ऐतिहसिकता से जोड़ा है। हबीव तनवीर सोन सागर कि प्रस्तुति में ग्रामीण जीवन के अभिशाप 'बाल विवाह' को दर्शकों के सामने समाधान के साथ प्रस्तुत करते है। लोरिक चंदा कि पारंपरिक गाथा के सभी रूपों और लोक नाट्य कि प्रस्तुति में इस समस्या को नहीं उठाया गया है। यह प्रयास हबीब तनवीर कि मौलिक कल्पना है।

सोन सागर में नटुवा नाच और नाचा कि शैली और परिवेश को अपनाकर ही कठायत नामक पात्र द्वारा किसान एवं ग्रामीण लोगों के भोलेपन को दर्शाया है।अभिनय के क्षेत्र में सोन सागर नाटक में गाथा के परिवेश से हटकर अभिनेताओं, कलाकारों को भैंस के रूप में प्रस्तुत किया है। साथ ही पशुओं का लोरिक के प्रति प्रेम दर्शाया है जिसमें लोरिक को जब बठिया मर रहा होता है तब सभी भैंसे बठिया को घेर कर भगाती है। सोन सागर के सभी वाद्य यंत्र नाचा और नटुवा नाच के मंच से ही लिए गए है। कोई नया वाद्य हबीव तनवीर ने नहीं लिया है। कलाकारों की वेशभूषा और मेकअप में पारंपरिक वेषभूषा को न अपनाकर मौलिकता के दर्शन होते है।

सोन सागर की कथा के अधिकांश अंश छत्तीसगढ़, मैथली, एवं भोजपुरी का समावेश है। परंतु सोन सागर की प्रस्तुति में लोरिक और चंदा के प्रेम की सरसता कम दिख पड़ती है। कथा में नई कल्पना शंकर के श्राप से बावन का 12 वर्ष तक भटकना दिखाया है। जिसका उल्लेख पारंपरिक गाथा के किसी भी रूप में नहीं मिलता है। प्रस्तुति में चंदा द्वार मंत्र से लोरिक की पत्नी को सुलादेना दिखाया है नाटककार अपनी प्रक्रिया द्वारा नया रूप देता है। जनचेतना को विकसित करते हुए अनगढ़ लोककला को सौंदर्य का संस्कार देता है। उसे हूबहू प्रस्तुत करने में अंधविश्वास को बल मिलता है। इन स्थितियों को तर्क-सम्मत आधार की जरूरत है। हबीब तनवीर जैसे ख्यातिलब्ध और प्रतिष्ठित नाटककार प्रस्तुत यह कथानक अधिक सुव्यवस्थित होना चाहिए। लोरिक और चंदा का चरित्रगठन अधिक परिमार्जित होना चाहिए।

वहीं बंसी कौल द्वारा निर्देशित नाटक 'एक तारा टूटा'के तत्व भी राऊत नाचा के तत्वों से जुड़े हुए है। लाठी चलाने दोहों को पढ़ने, उसके नृत्य को पढ़ने एवं वाद्य यंत्रों को नाटक की परियोजनाओं में प्रयोग किया गया है। नाटक की प्रस्तुति में नर्तकों को राऊत नाचा के नृतकों से अभ्यास करवाया गया। जिससे स्पष्ट होता है की निर्देशक नाटक की प्रस्तुति को छत्तीसगढ़ की शैली में करा चाहते है। इसका एक कारण यह भी था कि जहाँ जहाँ इसकी प्रस्तुति होनी थी वह क्षेत्र छत्तीसगढ़ी परिवेश के अंतर्गत आता है।

एक तारा टूटा कि प्रस्तुति किसी एक अंत पर ख़त्म नहीं होती क्योंकि लोरिक चंदा गाथा भी अलग अलग ढंग से कही गयी है। नाटककर और निर्देशक का मत भी यही रहा है। नाटक की स्क्रिप्ट में क्रमबद्धता नहीं है एक कहानी से दूसरी कहानी निकलती है। नाटक में वेशभूषा में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है अधिकतर वेशभूषा नाचा से जुड़ी हुई है। नाटक

के मंचन के लिए एक विशेष प्रकार का वृत्ताकार रंगमंच तैयार किया गया, जोकि नाटक एवं गाथा की भव्यता के अनुरूप था। वाद्य यंत्र में बाँस गीतों में प्रयुक्त सभी वाद्यों को लिया गया।

नाटक का मूलतः कथानक बाँस गीत ही रहा है। सुमन कुमार जी से हुई बातचीत में भी यही बात उभरकर सामने आई की इस गाथा को चार अलग भागों में विभाजित किया और इन चारों भागो को भिन्न भिन्न प्रकार से अलग अलग स्थानों पर प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में अनेक मंडलियाँ बनाई गई थी।किडॉभारतीद्वारालिखितलोरिकायननाटकलोरिकचंदाकिकथाकोव्यापकतातथाविस्तृतकैनवासप्रदानकरतेहुएनाटककोआधुनिकतथासामाजिकबनाताहै।लोरिकायननाटककिकथावस्तुमेंलोरिकचंदागाथाकेविविधरूपोंकोसमाहितकियागयाहै।लोरिकायनकानायकजननायकहैवहपहलीजनक्रांतिकरताहै। जिसेउसकीआधुनिकताऔरप्रासंगिकताबढ़जातीहै।

लोक गाथा लोरिक चंदा पहली एसी गाथा है जिसको सृजनात्मक के सभी माध्यमों में देखा जा सकता है। साथ ही इस गाथा पर अनेक नाटकों का मंचन किया गया है। 10वीं शताब्दी कि इस कथा में परिवर्तनशीलता विद्यमान है।और आधुनिक रंगमंच के प्रयोक्ताओं को भी आकर्षित किया है। आज भी हम सामंती व्यवस्था के परिवेश में रहते है और लोरिक कि गाथा सामंती व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठती है।

आधुनिक जीवन बोध हमे भारतीय गंध नहीं दे पा रहे है। हमे निजी भारतीय जीवन स्पंदन की तलाश करनी होगी जो अपनी शैली और संगीत में हमें एक देशी छुवन दे सके। चाहे हमें ग्राम धारा की जीवन धारा मेंक्यों न लोटना पड़े। लोकनाट्य नाचा, नटुवा नाच फिल्मों के प्रभाव से अपनी मूल शैली से कटता जा रहा है। इसके लिए कलाकारों को आर्थिक आधार मिलना चाहिए। उनमें केवल व्यावसायिक दृष्टि न होकर जनचेतना और सामाजिक सुधार की दृष्टि होनी चाहिए। लोरिक की गाथा को विभिन्न प्रांतों के गायकों से सुनकर उसे लिपिबद्ध करना और उसका सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अध्ययन होना चाहिए। लोरिक गाथा को स्थानीय पारिवारिक परिदृश्यों के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे उसमें आधुनिक संदर्भ प्राप्त होगा। पारंपरिक गीतों, लोकनृत्यों के प्रयोग से आधुनिक नाटक में भावव्यंजना को लाया जा सकता है। लोरिक चंदा की गाथा पर अभी तक तीन या चार नाटक ही मंचन हुऐ है इसके लिए भारत सरकार को शोधर्तियों द्वारा नाटकों की रचना और राष्ट्रीय स्तर पर मंचन करवाना होगा।